Sankshipta Shri Yantrapuja

सङ्क्षिप्त श्रीयन्त्रपूजा

Document Information

Text title : Sankshipta Shri Yantrapuja

File name : sankShiptashrIyantrapUjA.itx

Category : devii, ShaTchakrashakti, pUjA

Location : doc_devii

Proofread by : Aruna Narayanan

Latest update : December 24, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 24, 2023

sanskritdocuments.org

सङ्क्षिप्त श्रीयन्त्रपूजा

जो साधक विस्तार से पूजादि नहीं कर पाएं उनके लिए
आचार्यों ने अनेक प्रकार की लघु-पूजा विधियां भी बनाई हैं जिनमें
कलश और शङ्ख (सामान्याघ्र्य पात्र) स्थापन करके निम्नलिखित पद्धति
से अर्चन करना चाहिए –
आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ च सङ्कीर्त्य । श्रीगुरुं
महागणपतिं भगवतीं महात्रिपुरसुन्दरीं च प्रणम्य पूजयेत् ।
ध्यानम्-
बालार्कारुण-तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड्-शेखराम् ।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत् ततश्च-

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः चतुरस्त्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहन-
चक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै
त्रिपुरादेव्यै नमः ।
२. ॐ त्रिवृत्तात्मकत्रिवर्गसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै कालरात्र्या-
दिसहितमातृकायोगिनीरूपायै त्रिपुरेशिनी देव्यै नमः ।
३. ॐ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरक-
चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादि षोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै
त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः ।
४. ॐ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदल पद्मात्मकसर्वसङ्क्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै
अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्ति सहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै
त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः ।
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं हक्लीं हस्त्रीः चतुर्दशारात्मक-सर्वसौभाग्य-
दायक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसङ्क्षोभिण्यादि चतुर्दशशक्तिसहित-

सम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरावासिनीदेव्यै नमः ।
६. ॐ हसैं हस्कलीं हस्सौः बहिर्दशारात्मक सर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादि दशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः ।
७. ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहित निगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः ।
८. ॐ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मक सर्वरोगहर चक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः ।
९. ॐ हस्त्रैं हस्कल्रीं हस्त्रोः त्रिकोणात्मक सर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादि त्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः ।
१०. ॐ (मूलमन्त्रः) बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपाय महात्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः ।

इसके पश्चात् नैवेद्यादि विधि करके नित्यकृत्य पूर्ण कर लें ।
रुद्रयामल में तो यहां तक लिखा है कि-
आराधनाऽसमर्थश्चेद् दद्यादर्चन-साधनम् ।
यो दातुं नैव शक्नोति कुर्यादर्चन-दर्शनम् ॥

अर्थात्-आराधना में समर्थ न होने पर पूजा की सामग्री प्रदान करे और यदि वह भी नहीं बन सके तो जहां पूजा होती हो, वहीं श्रद्धापूर्वक बैठकर पूजा का दर्शन करे । वस्तुतः यह महाविद्या "ब्रह्म-विद्या" है । इसकी १. स्थूल, २. सूक्ष्म और ३. परा के रूप में त्रिविध उपासना होती है । पराशक्ति ही विज्ञानानन्दघन ब्रह्म है । विज्ञानानन्दघन ब्रह्म का तत्त्व अत्यन्त सूक्ष्म एवं गुह्य होने के कारण शास्त्रों में उसे नाना प्रकार से समझाने का प्रयत्न गुआ है ।

इति सङ्क्षिप्त श्रीयन्त्रपूजा समाप्ता ।

Proofread by Aruna Narayanan

Sankshipta Shri Yantrapuja

pdf was typeset on September 24, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*